पद १६६

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल)

प्रभु तुज भक्तीची आवड काय रे।।ध्रु.।। निराकार तूं तुज नाम कैचें। तें तूं म्हणे यशोदेसी माय रे।।१।। तुझिया सत्तें जाहला क्षीराब्धी। तो तूं चोरिसी दुधावरची साय रे।।२।। टाकुनी लक्ष्मी सुंदर ललना। भोगावया गोपदारा पाही रे।।३।। माणिक म्हणे तुज ध्यात विधी उमापती। तो तूं चारिसी नंदा घरी गाय रे।।४।।